झारखण्ड सरकार

सूर्यमुखी
की उन्नत खेती

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण
(आत्मा) रामगढ़

E-mail : atmaramgarh@gmail.com

सूर्यमुखी एक प्रकाश असंवेदी फसल है जो वर्ष भर किसी भी मौसम में हर तरह की मिट्टी – काली, लाल एवं लवणीय मिट्टी में लगाई जा सकती है। लघु अवधि की फसल होने के कारण शुद्ध फसल के अलावा बहुफसलीय तथा अन्तराल खेती और सूखा सहनशील होने के कारण शुष्क भूमि खेती के लिए यह बहुत ही उपयुक्त है।

इसकी बीजों में सोयाबीन से भी ज्यादा प्रोटीन तथा 40 से 45 प्रतिशत तेल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त थायामीन, कैल्सियम, नाइसिन, विटामीन–डी एवं लौह भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इस फसल का तेल एक उत्तम स्वास्थ्यवर्द्धक खाद्य तेल है जो मुख्यतः उच्च रक्तचाप/हृदयरोगों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए असंतृप्त वसा अम्लों की प्रचुरता एवं न्यूनतम् कोलेस्ट्राल की मात्रा होने के कारण लाभप्रद है। वसा की

आपूर्ति के लिए चिकित्सक इस खाद्य तेल को हृदय रोगियों के लिए अनुशंसित करते हैं। सूर्यमुखी का आटा तैलीय गुणों से पूर्ण होता है तथा इसके बीज मुर्गियों एवं पशुओं के लिए उत्तम खाद्य–पदार्थ है।

प्रदेश के किसान सूर्यमुखी की खेती के लिए अब भी अनभिज्ञ है। इस फसल की खेती यदि उन्नत तरीके से की जाए तो हमारे कृषक बंधु इसकी खेती से अन्य फसलों की तुलना में अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं। सूर्यमुखी की अच्छी पैदावार हेतु निम्नलिखित तरीके से खेती करने से अच्छा लाभ प्रात किया जा सकता हैं।

भूमि एवं उसकी तैयारी

सूर्यमुखी की खेती, किसी भी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है पर अच्छी जल निकास वाली गहरी दोमट मिट्टी जिसकी उर्वरता अच्छी हो इसकी खेती के लिए बहुत ही उत्तम होती है। खेती के लिए 2–3 जुताई कर पाटा चलाकर मिट्टी को भूरभूरी कर लें।

उन्नत प्रभेद

सूर्यमुखी के अनेक प्रभेदों एवं संकर किस्मों को विभिन्न प्रान्तों एवं क्षेत्रों के लिए अनुशंसित किया गया है। झारखण्ड राज्य के लिए उन्नत एवं अनुशंसित किस्में निम्नानुसार हैं।

मॉडर्न :

यह किस्म 75 से 80 दिन में तैयार हो जाती है तथा शुद्ध फसल के अतिरिक्त बहुफसली एवं मिश्रित खेती के लिए अति उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 4.0–4.8 क्विंटल/एकड़ है।

सूर्या के. – 1 : यह किस्म भी लगभग 80 दिनों में तैयार हो जाती है तथा 4.0–4.8 क्विंटल/एकड़ की औसत उपज देती है।

बी.एस.एच. 1 : यह एक संकर किस्म है, जो रतुआ प्रतिरोधी एवं आल्टरनेरिया पत्रलांछन के प्रति सहिष्णु है तथा 90 से 95 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी उपज क्षमता 6.4–8.0 क्विंटल/एकड़ है।

बीज दर एवं बीजोपचार

सूर्यमुखी के किसी भी प्रभेद एवं संकर किस्म को बोने के लिए

4 कि.ग्रा. प्रति एकड बीजों की आवश्यकता होती है। बीजों में अंकुरण की समस्या से निदान पाने के लिए इन्हें पानी में भिंगोकर हल्के बीजों को हटा देना चाहिए तथा अन्य बीजों को 12 घंटे पानी में रखकर तथा पानी से निकाल कर छाया में सुखा लेना चाहिए एवं बोने के पूर्व 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज के अनुसार कैप्टन या थिरम या बैविस्टीन से उपचारित करना चाहिये।

बीज बोने का समय एवं तरीका

प्रकाश के प्रति संवेदनशील होने से सूर्यमुखी की कभी भी बोआई की जा सकती है। खरीफ मौसम में जुलाई माह का अंतिम सप्ताह मारडेन को छोड़कर अन्य किस्मों के लिए

उपयुक्त समय है, जबकि मारडेन किस्म को अगस्त मास तक बोया जा सकता है। रबी मौसम में अक्टुबर–नवम्बर एवं बसन्त मौसम में जनवरी–फरवरी माह सूर्यमुखी के बीजों को बोने का उपयुक्त समय है। बीज को 5 सेंमी. से गहरा न बुवे तथा एक स्थान में 2–3 बीज ही गिरावें। बीज से बीज की दूरी 20 सेंमी. एवं कतारों की दूरी 45 सेंमी. रखना चाहिए। अंकुरण हो जाने के 15 दिन बाद एक स्थान पर एक ही पौध को रखना चाहिए।

उर्वरक प्रबन्धन

सूर्यमुखी की उपज क्षमता के दोहन के लिए जरूरी है कि फसल को पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्वों की उपलब्धता हो। अतः असिंचित (खरीफ मौसम) एवं सिंचित दशा (रबी/बसन्त/ग्रीष्म) के लिए अनुशंसित उर्वरकों की मात्रा को अवश्य देना चाहिए। ध्यान रखना चाहिए कि नेत्रजन की आधी मात्रा एवं फॉस्फेट तथा पोटाश की पूरी को बोआई के

समय देना चाहिए, जबकि शेष बची नेत्रजन की मात्रा को प्रथम गोड़ाई/कोड़नी के बाद यानि 20–25 दिनों में टापड्रेस करना चाहिए।

अंसिचित दशा : 40 नेत्रजन : 50 स्फूर : 16 पोटाश कि.ग्रा. /एकड़

सिंचित दशा : 60 नेत्रजन : 90 स्फूर : 24 पोटाश कि.ग्रा. /एकड़

खरपतवार नियंत्रण

फसल को 45 दिनों तक खरपतवार रहित रखना चाहिए। इसके लिए खेत की कोड़ाई 20–25 दिनों में तथा दूसरी कोड़नी 35 से 40 दिनों में करना जरूरी है। अच्छा होगा अगर पूर्व अंकुरण व्रणनाशी लासो या बासोलीन 600.ग्रा./एकड़ का छिड़काव बुआई के तुरन्त बाद कर दें। इससे खरपतवार की समस्या से काफी कुछ राहत मिल जाती है।

सिंचाई

रबी या बसन्त या ग्रीष्म मौसम में बुनी गई सूर्यमुखी की फसल को 15–20 दिनों को अन्तराल में भारी मिट्टी में सिंचाई की आवश्यकता होती है। साधारणतया इस फसल को 6–10 सिंचाई की जरूरत होती है। ध्यान रखना चाहिए कि फसल को क्रान्तिक वर्धन अवस्था जैसे कली प्रवर्तन (20–25 दिन बाद), वटन अवस्था (35–40 दिन), पुष्प प्रवर्तन (55–60 दिन) एवं बीज परिवर्धन (75–80 दिन) में नमी की कमी न हो अतः इन क्रान्तिक वर्धन अवस्थाओं में सिंचाई अति आवश्यक है।

पौधा संरक्षण

इस क्षेत्र के लिए नई फसल होने के कारण अभी इस फसल में कीट एवं व्याधियों का प्रकोप अधिक नहीं है। अभी रतुआ, पत्रलांक्षण व्याधियाँ एवं जैसीड़, शीर्ष छेदक भुआ पिल्लु का प्रकोप भी पाया गया है। अगर इन कीट व्याधियों पर नियंत्रण नहीं किया गया तो इनका प्रसार असम्भावी है।

रतुआ एवं पत्रलांछन व्याधियों के लिए डाइथेन एम.–45 (0.02)

या मेनकोजेब (0.25) का छिड़काव 15–15 दिनों के अन्तराल में करें। शीर्ष छेदक एवं जैसीड कीटों के नियंत्रण के लिए मानोक्रोटोफास (0.05) या इन्डोसल्फान (0.07) का छिड़काव आवश्यकतानुसार करना चाहिए।

भुआ पिल्लू की रोकथाम के लिए प्रारम्भिक अवस्था मे ही कीड़ों को एकत्र कर मार देना चाहिए। सूड़ियाँ जब खेत में फैलने लगे तो डाइक्लोरफास 120 मि.ली./एकड छिड़काव करें पर यदि सूड़ियाँ रोयेंदार हो तो इन्डोसल्फान 0.2 का छिड़काव इनके नियंत्रण के लिए आवश्यक है।

कटनी एवं दौनी

जब फसल के छत्तों पर पिछला भाग पीला पड़ जाय तो समझंना चाहिए कि फसल तैयार हो गई है। तब इसे डण्ठल समेत काट कर छायेदार जगह में एकत्र कर एक सप्ताह बाद धूप में सुखाकर डण्डें से पीट–पीट कर या छत्ते को लोहे के जाली में रगड़–रगड़ कर बीजों को निकाल लेना चाहिए। तदन्तर बीजों को भली भांति साफ कर तथा धूप में भलि–भांति सुखा कर भण्डारण करना चाहिए। इस प्रकार सूर्यमुखी की असिंचित दशा में 3.2–4.0 क्विंटल/एकड एवं सिंचित दशा में 6.0–8.0 क्विंटल/एकड उपज मिल जायेगी।

837 (01-20) Annapurna Press 0651-2331800, e-mail : appranchi.1969@gmail.com

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण

(आत्मा) रामगढ़

E-mail : atmaramgarh@gmail.com

परियोजना निदेशक : आत्मा, रामगढ़   उपायुक्त सह अध्यक्ष : आत्मा रामगढ़